एक ऐसा हस्तक्षेप : जिसने द्विराष्ट्र सिद्धान्त के आधार को ही तोड़ दिया

पंकज कुमार सिंह*

पाकिस्तान द्वारा की गई सैनिक कारवाई के परिणामस्वरूप लगभग एक करोड़ शरणार्थी भारत आ गये थे और बाध्य होकर भारत को उस क्षेत्र में कारवाई करनी पड़ी। जिसके परिणाम स्वरूप स्वतंत्रता बांग्लादेश के अभ्यूदय के रूप में सामने आया। फिर भी यह आरोप लगाया जाता है कि बांग्लादेश में स्वायता आंदोलन का संबंध विदेशी पृथकतावादी शक्तियों से था।[1] ऐसे आलोचकों का यह आरोप है कि बांग्लादेश में चल रहे स्वायत्तता आंदोलन को बढ़ावा देकर स्वतंत्र राज्य के निर्माण के लिए भारत द्वारा प्रोत्साहन दिया गया क्योंकि पाकिस्तान को विखंडित कर उसे कमजोर किया जाए।

जहां तक बांग्लादेश में आंदोलन का प्रश्न हैं यह भारत द्वारा प्रोत्साहित नहीं था। मूलतः यह स्वयं बांग्लादेश की आम जनता द्वारा आत्मनिर्णय की मांग से संबंधित था जो पाकिस्तान के साथ रहते हुए भी क्षेत्रीय आधार पर स्वायतता की मांग कर रहे थे। इस संदर्भ में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी ने यह स्पष्ट किया कि यदि पाकिस्तान के दो भागों में संघर्ष है तो यह हमारे कारण नहीं है बल्कि यह स्वयं पाकिस्तान शासकों के कारण है।[2]

पूर्वी पाकिस्तान में चल रहे गृहयुद्ध के कारण बड़ी संख्या में शरणार्थी भारतीय भूमाग में प्रवेश कर गये। जिसके फलस्वरूप भारत के लिए अत्यधिक आर्थिक और विभिन्न प्रकार की सामाजिक समस्यायें उत्पन्न हो गई जिसका अन्ततः प्रभाव भारत की राजनीतिक पद्धति पर पड़ने लगा। उस दृष्टि से यह भारत पर असैनिक आक्रमण था और भारत की कार्यवाही का उद्देश्य अपनी राष्ट्रीय प्रतिरक्षा की रक्षा करना था।[3]

सुमित गांगूली के अनुसार, भारत की भूमिका प्रतिक्रियात्मक थी। भारत द्वारा किया गया हस्तक्षेप मूलतः अपनी प्रतिरक्षा संबंधी हितों, आर्थिक हितों और मानवतावादी दृष्टिकोण से प्रेरित था।[4]

लेकिन भारत–पाकिस्तान संघर्ष की पृष्ठभूमि मूलतः भारत की पूर्व के दृष्टिकोण के आलोक में देखा जा सकता है। 1970–71 की घटना ने द्विराष्ट्र सिद्धान्त की मान्यता को झुठलाने का अवसर प्रदान कर दिया और उस पृष्ठभूमि में संभवतः भारत ने पूर्वि पाकिस्तान में अलगाववादी शक्तियों को प्रोत्साहित किया।[5] और वहां असंतोष और अराजकता की स्थिति उत्पन्न की।[6] वास्तव में पाकिस्तान ने तो यहां तक आरोप लगाया कि पूर्वी पाकिस्तान सरकार मूलतः भारत निर्मित है।

पूर्वि पाकिस्तान की अवामी लीग के नेता शेख मुजीबुरहमान द्वारा 26 मार्च 1971 को ही स्वतंत्रता की घोषणा कर दी गयी थी उसी समय से भारत ने सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर पूर्वी बंगाल के प्रति सहानुभूति और समर्थन व्यक्त किया जाने लगा। पाकिस्तानी कार्यवाही की आलोचना करते हुए तथा शेख मुजीब की घोषणा पर सरकारी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए 27 मार्च 1971 को श्रीमति इंदिरा गांधी ने स्पष्ट किया था कि पूर्वी बंगाल में कुछ नविन घटनाएं घटी है यह घटना जनतांत्रिक क्रिया का प्रतीक है जहां की लगभग समस्त जनसंख्या ने लगभग एक स्वर में जनतांत्रिक मूल्यों के पक्ष में अपना मत व्यक्त किया है। हमने इस घटना का स्वागत किया था इसलिए नहीं कि हम किसी दूसरे राज्य के मामले में हस्तक्षेप करना चाहते हैं बल्कि हमने इन मूल्यों के कारण उसका स्वागत किया है जिन मूल्यों के प्रति अवामी लीग पार्टी प्रतिबद्ध है वे मूल्य है जिनके प्रति हमारी वचनबद्धता है।[7]

25 मार्च को की गई सैनिक कार्यवाही का उल्लेख करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया की यह मात्र किसी एक आंदोलन का कूचला जाना नहीं है बल्कि निहत्थे लोगों को टैंक से कूचला जाना है।[8] भारत इस प्रकार के दुःखद घटना के प्रति आंख मूँदकर नहीं रह सकता है। हम इस समस्या के प्रति जागरूक है और वहा हो रही गतिविधियों को निरन्तर अपने को भिज्ञ बनाते रहेंगे क्योंकि हमें उचित अन्तर्राष्ट्रीय मानदण्डों का अनुपालन करना है। प्रधानमंत्री के उन वक्तव्यों से स्पष्ट हैं कि भारत पूर्वी पाकिस्तान में अपने हितों को महत्वपूर्ण मानता था और उनकी रक्षा करना चाहता था लेकिन इस क्रम में वह अन्तर्राष्ट्रीय जनमत को भी विश्वास में लेने का पक्षधर था।

पटना के समाचार पत्र द इंडियन नेशन ने बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर के श्रोतों से इस बात की पुष्टि की कि वे पाकिस्तान की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे सेनानियों को हर संभव सहायता यहां तक कि अस्त्र–शस्त्र की आपूर्ति भी करने को तैयार है। उन्होंने आगे यह भी स्पष्ट किया कि यदि इसका जो भी परिणाम निकले पूर्वी पाकिस्तान में स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे लोगों को अस्त्र–शस्त्र की आपूर्ति अवश्य करेंगे।[9] जबकि इंडियन एक्सप्रेस ने स्पष्ट शब्दों में भारत से सशस्त्र हस्तक्षेप की मांग की। उसके अनुसार यह ऐतिहासिक क्षण है और हमें कारवाई करनी चाहिए।[10]

***नेट–पीएच०डी० (राजनीति विज्ञान)**

उपलब्ध प्रमाणों से ऐसा प्रतीत होता है कि भारत स्वतंत्र बांग्लादेश के लिए संघर्षरत स्वतंत्रता सयंनानियों को सहायता करने को कृतसंकल्प था। प्रारम्भ में भारत सरकार सैनिक कार्यवाही करने या पाकिस्तान के साथ सैनिक संघर्ष करने के पक्ष में नहीं थी। प्रसिद्ध ब्रिटिश पत्र डेली टेलीग्राफ के रिपोर्ट को उद्धृत करते हुए पाकिस्तानी सामाचार पत्र द डॉन न लिखा कि बांग्लादेश की तथाकथित सरकार सिर्फ कलकत्ता में स्थित है तथा भारतीय जनसम्पर्क पदाधिकारी इसे स्वतंत्र सरकार के रूप में प्रचारित कर रहे हैं।[11]

मई प्रारम्भ होते–होते भारत ने बांग्लादेश की सेना को प्रशिक्षण देना प्रारम्भ कर दिया और अप्रत्यक्ष रूप से बांग्लादेश की औपबंधिक सरकार को पूर्वी पाकिस्तान में गुरिल्ला युद्ध प्रारम्भ करने में समर्थन करना प्रारंम्भ कर दिया।[12]

संदर्भ–सूची :

1. जॉन जी स्टोसिंगर, द माइट ऑफ नेशन्स, वर्ल्ड पॉलिटिक्स इन आवर टाइम्स (न्यूयार्क 1975), पृष्ठ 101–102
2. लोकसभा परिचर्चा वोल्यूम–2, संख्या–3, 21 मई 1971 पृष्ठ 220
3. अंजू एस० आदयाय, सेल्फ डिटरमिनेशन इन वर्ल्ड पॉलिटिक्स इमरजेन्स ऑफ बांग्लादेश (लोकप्रकाशन इलाहाबाद 1984), पृष्ठ 99
4. सुमति गांगूली, द ऑरिजिन ऑफ वार इन साथ एशिया, (लंदन 1986) पृष्ठ 248
5. श्री० ए9व० चौधरी, बांग्लादेशः व्हाई इट हैपेन्डर? इन्टरनेश्नल अफेयर्स (भास्को वाल्यूम 48, 1972, पृष्ठ 248)
6. एस० ए० खालिक, पाकिस्तान : पीस एण्ड वार, लंदन 1978 पृष्ठ 5
7. इंदिरा गांधी, इंडिया एण्ड बांग्लादेश, ओरियन्ट लांगमेन नई दिल्ली, 1972 पृष्ठ 9–10
8. बांग्लादेश इकोमेन्ट्रस, भारत सरकार प्रकाशन मंत्रालय, 1971 पृष्ठ 669–670
9. द इंडियन नेशन, पटना 6 अप्रैल 1971
10. द इंडियन एक्सप्रेस, बाम्बे 30 मार्च 1971
11. द डॉन, 22 अप्रैल 1971
12. अरुण भट्टाचार्यी, डेट लाईन, मुजीब नगर विवारन प्रकाशन दिल्ली, 1972, पृष्ठ 124–125

****

सर्वं खल्विदं ब्रह्म

श्रीमन् नारायण तिवारी*'

सर्वा उननिषदः आत्मवादं प्रमुखतया चर्चन्ति। अतएव तत्र ब्रह्मैव केवलमेकमद्वितीयं तत्त्वमन्यत्सर्वं 'जागतिकवस्तुजातमयर्थार्थ मिथ्यारूपमिति शंकरमतं तत्र कोष्ठतोऽनेकधोपदिस्टमस्ति। तथहि छान्दोम्योपनिषत् कथयतिसर्व खल्विदं ब्रह्मेति'। एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म नेह नानास्ति किञ्चेति'। एवं' स एवाधस्तात् स उपरिष्टात् पश्चात् स पुरस्तात् स दक्षिणतः स उत्तरतः' इत्युक्त्वा साधमात्मैवेदं सर्वमिति च प्रतिपादयति। मुण्डकोपनिशदप्यनुवक्तीमां कथाम्। 'ब्रह्मैवेदममृतं पुरस्तात् ब्रह्म पश्चात् ब्रह्म दक्षिणश्चोतरेणाधश्चोर्ध्वं प्रसृतम् इति।

श्वेताश्वतरोऽपि – यस्मात्परं नापरमस्ति किंचिदिति वचनेन तदुपोऽलयति।

वृहदारण्यकोपनिषदि–इंद सर्व यदयमात्मेति' ब्रुवन् ''न तु तद् द्वितीयमस्ति ततांऽन्यत् विभक्तं यद् पश्यत्'' नान्यदतोऽस्ति द्रष्टष नान्यदतोऽस्ति श्ररैतृ नान्यदतोऽस्ति मन्तृ नान्यदतोऽस्ति विज्ञातृ ''इति च प्रतिपादपति। नषसिंहोपनिषदि बृते – ''बृह्मवेदं सर्वमिति''

न केवलं ब्रह्मण एवाद्वितीयस्वमं कत्वं वोपापादयत्युपनिषत् अपि तु नानात्वमपि तस्य निषेध्यति। तथा हि कौषीतकी – '' नो एतत् नानेति '' ब्रवीति। वृहदारण्यको पनिषदि–नेह नानास्ति किंचनेति'' चोक्तिरस्ति। कठारेपनिषदि ब्रह्मण आत्मनो वा स्वरूपम् अलौकिकरूपेणा वलोक्यते।

नृसिंहोपनिषदि उत्तरस्मिन् खण्डे उक्तमस्ति नात्र काचिद्भिदा अस्ति नैवात्र काचिद् भिदा अस्ति। अत्र भिदामिन मन्यमानः मृत्योः मृत्युमाप्नोति।।

ऋग्वेदोऽपि प्रमाणमिह भवति। तत्रोक्तम् तस्मात् हान्यत् नापरः किंचनास ''इति'' पुरूष एवेदं सर्वं यच्च भूर्त यच्च भावयम् '' उतामृत्तवस्येशानो यदन्नेनाति रोहित'' च। अयमेवोपनिषदः विश्वब्रह्मवादः समयस्ति। अथात् अस्मिन् विश्वे केवलं ब्रह्मण एव पारमार्थिकमस्तित्वं विघते। अयमेवाद्वैतवादस्याप्यर्थ इति। फलत एभिरूर्ध्व निर्दिष्टवचनैः ब्रह्मणोऽद्वैतं तत्त्वं जउस्य घटादेः, शुक्तौ रजतादेः, शशं श्रृंगादेश्च क्रमशः व्यावहारिकत्वं प्रातिमासिकत्वं तुच्छत्वचेति सुप्रसिद्धः शाड्करवेदान्तसिद्धान्तः संगच्छते। अतएव शंकराचार्यस्य गुरूचरणाः गौडपादाचार्याः माण्डूक्यकारिकाया मुक्तवन्तः।

*डी0ए0वी0 पब्लिक स्कूल थावे, गोपालगंज।